Dainik Jagran
Shishu ke dil mai pikolo lag bachai jaan
Jul 20, 2021 | Delhi | Pg No.: 6 | Top Center | Bureau | Sq Cm: 364 | AVE: 920813 | PR Value: 4604065

शिशु के दिल में पिकोलो लगा बचाई जान

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : दिल की जन्मजात बीमारी से पीड़ित 700 ग्राम वजन वाले शिशु के दिल में पिकोलो डिवाइस लगाकर उसकी जान बचाई गई। साकेत स्थित मैक्स अस्पताल के अस्पताल के डाक्टरों का दावा है कि उत्तर भारत में पहली बार इतने कम वजन वाले शिशु को पिकोलो डिवाइस लगाई गई है। यह बेहद चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया थी, लेकिन डाक्टरों ने बहुत सटीक तरीके से सात मिनट में डिवाइस लाकर दिल में खुली एक धमनी को बंद कर दिया।

दरअसल, शिशु का प्रीमैच्योर जन्म हुआ। गर्भावस्था के 32वें सप्ताह में जन्म लेने की वजह से वजन बहुत कम था। डाक्टरों के अनुसार 1.6 किलोग्राम से कम वजन वाले शिशुओं को बचा

मैक्स अस्पताल में हुआ 700 ग्राम वजन वाले शिशु का इलाज, प्रीमैच्योर जन्म के कारण मुश्किल थी इलाज की प्रक्रिया

पाना चुनौतीपूर्ण होता है। ऐसे में इस शिशु के दिल की जन्मजात बीमारी के इलाज की प्रक्रिया जटिल थी। बच्चे को पेटेंट डक्टस आर्टेरियोसस (पीडीए) नामक बीमारी थी। अस्पताल के पीडियाट्रिक कार्डियोलॉजी के प्रभारी डा. नीरज अवस्थी ने कहा कि हर बच्चे के दिल में एक अतिरिक्त धमनी होती है, जो जन्म के बाद स्वतः बंद हो जाती है। हालांकि, कई बच्चों में यह नस बंद नहीं होने से हृदय से फेफड़े में रक्त का उल्टा प्रवाह होने लगता है। इस वजह से फेफड़ों में रक्त जमा होने लगता है। प्रीमैच्योर बच्चों में यह समस्या अधिक देखी जाती है। इस वजह से बच्चों को सांस लेने में परेशानी होने लगती थी। बच्चे के तीन से छह माह की उम्र तक पहुंचने से पहले दवा से इलाज किया जाता है। इस शिशु का जल्द इलाज जरूरी था। इस वजह से जन्म के 17 दिन बाद शिशु का इलाज करना पड़ा।

जिंदगी बचाती है नन्हीं पिकोलो : पिकोलो एक छोटे बटन के आकार की एक डिवाइस है। इस डिवाइस को आमतौर पर मरीज के पैर में कैथेटर लगाकर धमनी के रास्ते दिल के प्रभावित हिस्से तक पहुंचाया जाता है और उस हिस्से को बंद कर दिया जाता हे जहां से रक्त स्राव हो रहा होता है।

Source: Dainik Jagran
Link: http://indiamediamonitor.in/ViewImg.aspx?4WMs2Z475Xan9HgSVTZ8kVX7IlQeqzFHU22HtxjGyryG1hIu6alD6ORTj+ychmOw3KOQ6CZKiBI02gXLiAN4Cv4RJ2qViaaP9nhk+4lZqCc=